Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPlL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 14

ठेले पर हिमालय - धर्मवीर भारती

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. नैनीताल से कोसी जाने वाली सड़क को लेखक ने कैसी बताया है –

(अ) सुन्दर-साफ व आरामदायक
(ब) सीधी व सपाट
(स) ऊँची और मजेदार
(द) ऊबड़-खाबड़ और कष्टप्रद
उत्तर: (द)

प्रश्न 2. शुक्लजी के साथ एमिल जोला-सी दाढ़ी वाला युवक कौन था –

(अ) कवि
(ब) चित्रकार
(स) लेखक
(द) संगीतकार
उत्तर: (ब)

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. लेखक का मित्र ठेले पर बर्फ देखकर खोया-खोया क्यों हो गया?

उत्तर: लेखक का मित्र ठेले पर बर्फ देखकर हिमालय के प्राकृतिक सौन्द्रर्य को याद करके खोया-खोया सा हो गया।

प्रश्न 2. लेखक ने किससे मिलने पर यह कहा कि उन जैसा साथी तो सफर में पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है?

उत्तर: लेखक ने शुक्ल जी से मिलने पर कहा कि उन जैसा साथी तो सफर में पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है।

प्रश्न 3. लेखक की सारी निराशा व खिन्नता कब दूर हुई?

उत्तर: जब लेखक ने कौसानी में हिम शिखरों पर जमी बर्फ को देखा तो हिम-दर्शन से उसके मन की सभी खिन्नता और निराशा दूर हो गई।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. त्रिताप कौन-कौन से होते हैं ? हिमालय की शीतलता से वे कैसे दूर हो गए?

उत्तर: त्रिताप अर्थात् तीन प्रकार के कष्ट होते हैं जिन्हें शास्त्रों में दैहिक, दैविक और भौतिक कष्ट कहा जाता है। लेखक को जब हिमालय के दर्शन हुए तो उनके मन की खिन्नता, शारीरिक थकान और सारे सफर में पाये कष्ट आदि सब दूर हो गये। इस प्रकार हिमालय की सुन्दरता, पवित्रता, शीतलता और शांति के कारण लेखक के त्रिताप दूर हो गये।

प्रश्न 2. हिमालय के पर्वतीय सौन्दर्य में स्नोफाल किस प्रकार पर्यटकों को अधिक आकर्षित करता है?

उत्तर: हिमालय का सौन्दर्य पर्यटकों को सदैव आकर्षित करता रहा है। यहाँ की सुरम्य घाटियाँ , दर्रे, ग्लेशियर, रंग-बिरंगे फूल , भांति-भांति के पेड़-पौधे , कल-कल

करती नदियाँ आदि पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र हैं। ऐसे सुन्दर प्राकृतिक परिवेश में जब स्नोफाल होती है तो लगता है कि आसमान से रूई के छोटे-छोटे फाहे गिर रहे हैं। पर्यटकों के लिए यह दृश्य अनुपम सुख देने वाला बन जाता है और वे भयंकर सर्दी को सहन करके भी स्नोफाल देखने जाते हैं।

प्रश्न 3. लेखक ने कौसानी गाँव में डूबते सूरज का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए?

उत्तर: लेखक द्वारा कौसानी ग्राम में डूबते हुए सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया गया है। जब सूर्यास्त होने लगा तो उसकी पीली आभा हिमशिखरों एवं ग्लेशियरों पर केसर का आभास करा रही थी। घाटियाँ गहरी पीली हो गई थी। धीरे-धीरे जैसे-जैसे अँधेरा होने लगा घाटी में कालिमा छाने लगी। इस प्रकार सूर्यास्त के समय के प्राकृतिक वातावरण का हृदयहारी वर्णन किया गया है।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पर्वतीय क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य पर एक लेख लिखिए।

उत्तर: प्रकृति का स्वरूप अत्यन्त रमणीय होता है। नदी, वन, पर्वत, आकाश, समुद्र सभी सुन्दर लगते हैं किन्तु पर्वतीय क्षेत्रों की प्राकृतिक सुषमा ज्यादा मनोहारिणी होती है।

प्रकृति के विविध स्वरूप पर्वतों पर दिखाई देते हैं। एक के साथ एक जुड़ी हुई पर्वत श्रृंखलाएँ, उन पर बने पथरीले रास्ते हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं। कहीं मजबूत चट्टानें होती हैं तो कहीं कमजोर चट्टानें भी होती हैं। ये चट्टानें एक दूसरे से जुड़कर पहाड़ी शिखरों का रूप लेती हैं। लाल-लाल चट्टानें देखने में सुन्दर लगती हैं। इन चट्टानों पर सीढ़ीनुमा खेत होते हैं। इनमें उगे हुए पौधे हरे-भरे और सुन्दर लगते हैं। पर्वतों पर घने जंगल होते हैं। इन वनों में चीड़, देवदार आदि अनेक प्रकार के वृक्ष होते हैं। कहीं-कहीं पर झाड़ियाँ भी पाई जाती हैं। वहाँ हरी-हरी लम्बी घास भी उगती है। इन वनस्पतियों से ढंके होने से पर्वत शिखरों की शोभा द्विगुणित हो जाती है। उनका ऊँचा माथा आकाश को छूता हुआ-सा प्रतीत होता है। इन पर्वतीय वनों में अनेक जीव-जन्तु रहते हैं। छोटे-छोटे कीट-पतंगों से लेकर हाथी , शेर, चीता आदि बड़े-बड़े पशु-पक्षी इन वनों में पाए जाते हैं। ये पशु-पक्षी बड़े मनोहर होते हैं। वनों तथा पशु संरक्षण उद्यानों में इनको देखने अनेक लोग जाते हैं।

पर्वतों पर बहती नदियाँ अपने कल-कल स्वर से हमें आनन्द देती हैं, वहाँ वैसे जलाशयों-सरोवरों में स्वच्छ दर्पण जैसा जल भरा होता है। इनमें पर्वतों की मनोहर छवि दिखाई पड़ती है। पर्वतों की ऊँची चोटियाँ सफेद बर्फ से ढकी रहती हैं। यह बर्फ अत्यन्त सुन्दर होती है। सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश में वह रंग-बिरंगी और चमकीली लगती है। यहाँ सूर्य और चन्द्रमा का उदय और अस्त का दृश्य बहुत मनोहर होता है। अँधेरी रात में टिमटिमाते तारों की अपनी अलग ही छवि होती है। पर्वतों पर हिमपात के मनोहर दृश्य को देखने पर्यटक दूर-दूर से आते हैं।

प्रश्न 2. पर्यटन का हमारे जीवन में क्या महत्व है?

उत्तर: विभिन्न स्थानों की यात्रा को पर्यटन कहते हैं। इन यात्राओं के पीछे कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता। किसी स्थान को देखना ही पर्यटन में निहित भावना होती है। पर्यटन धार्मिक , ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक दृष्टि से प्रसिद्ध स्थानों का किया जाता है। ये स्थल अपने देश में अथवा विदेश में कहीं भी हो सकते हैं। पर्यटन का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। पर्यटन से व्यक्ति का ज्ञान बढ़ता है। वह जहाँ जाता है , उस स्थान के विषय में तरह-तरह की जानकारियाँ उसको प्राप्त होती हैं। पुस्तकों में पढ़कर अथवा चित्रों को देखकर भी किसी स्थान के बारे में ज्ञान मिलता है ,

THE HINDI PAGE जान कुछ नया www.thehindipage.com

किन्तु जो ज्ञान उस स्थल को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखकर प्राप्त होता है , वह अधिक प्रभावशाली होता है। पर्यटन आनन्द-वर्धक तथा मनोरंजक होता है। नए-नए स्थानों की यात्रा में यद्यपि कष्ट उठाना पड़ता है और धन का व्यय भी होता है , परन्तु उससे प्राप्त आनन्द की तुलना में व्यय धन व समय कुछ भी नहीं है। इन स्थानों पर अनेक दर्शनीय चीजें होती हैं, जो दर्शक के मन को आनन्द से भर देती हैं।

ऐतिहासिक स्थलों , इमारतों, संग्रहालयों आदि को देखना इतिहास सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ने से अधिक महत्वपूर्ण होता है। वहाँ जाकर हम उस काल अथवा युग से स्वयं भेंट कर सकते हैं। ताजमहल को देखकर हम उसकी सुन्दरता से ही प्रभावित नहीं होते बल्कि उसको बनाने वाले बादशाह शाहजहाँ के जीवन तथा घटनाओं से भी रूबरू होते हैं। इसी प्रकार धार्मिक स्थलों की यात्रा धर्म में हमारे विश्वास को बढ़ाने वाली होती है। मंदिरों की कलात्मक मूर्तियाँ तथा भवन हमारे मन को प्रसन्नता से भर देते हैं।

प्राकृतिक स्थानों यथा पर्वतों, वनों, समुद्र-तटों आदि का पर्यटन अधिक आनन्ददायक होता है। इन स्थानों पर जाकर प्रकृति को निकट से देखने का अवसर मिलता है। पर्वतों की चोटियों पर जमीं श्वेत चमकीली हिम , वनों में विविध प्रकार के वृक्ष और लतायें , उनमें रहने वाले जीव-जन्तु , समुद्र तट का विस्तार , सूर्य और चन्द्रमा के प्रकाश से प्रभावित जल, उसमें उठती लहरें आदि पर्यटक को बार-बार बुलाते हैं।

पर्यटन से जीवन सार्थक होता है। प्रसिद्ध पर्यटक राहुल सांकृत्यायन ने विश्व के अनेक स्थानों का पर्यटन किया था। पर्यटन की प्रेरणा देते हुए वह कहते हैं

सैर कर दुनियाँ की गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ।
जिन्दगानी भी मिली तो नौजवानी फिर कहाँ।।

भाषा की बात

'कुछ देर बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात्, फिर एक हलका-सा विस्मय को धक्का मन को लगा;' -यह एक मिश्र वाक्य है। मिश्र वाक्य किसे कहते हैं। यह कितने प्रकार से बनते हैं?

उत्तर: जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य तथा एक अथवा अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं , उसको मिश्र उपवाक्य कहते हैं। मिश्र वाक्य में तीन प्रकार के उपवाक्य (आश्रित) होते हैं। इन आश्रित उपवाक्यों के अनुसार मिश्रवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क) संज्ञा उपवाक्य– ये उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया के कर्ता, कर्म, पूरक आदि होते हैं; जैसे- राधा ने सीता से कहा कि वह उसे उपहार देगी।

(ख) विशेषण उपवाक्य – जब कोई उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के कर्ता , कर्म इत्यादि की विशेषता प्रकट करता है, तो उसको विशेषण उपवाक्य कहते हैं ; जैसे- दशरथ के चार पुत्र थे जो अत्यंत आज्ञाकारी थे।

(ग) क्रिया –विशेषण उपवाक्य- प्रधान उपवाक्य की क्रिया के समय , दशा, स्वभाव आदि का ज्ञान क्रिया-विशेषण उपवाक्य कराते हैं ; जैसे- जब बिजली चली गई, तो ध्वनि विस्तारक यंत्र ने काम करना बन्द कर दिया। जैसे ही रात हुई, वह बिस्तर पर लौट गया।

THE HINDI PAGE जानेकुछ नया www.thehindipage.com

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 14

ठेले पर हिमालय - धर्मवीर भारती

लेखक परिचय

धर्मवीर भारती का जन्म सन् 1926 ई. में अतारसुइया, इलाहाबाद में हुआ था वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे उन्होंने काव्य, उपन्यास, नाटक, कहानी, निबन्ध तथा आलोचना सभी विधाओं में सृजन किया। साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग का सम्पादन कर वे काफी लोकप्रिय हुए। इससे पूर्व भारती इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक व कुछ समय तक साप्ताहिक संगम के सम्पादक भी रह चुके थे।

उनकी रचनाओं में मध्यम वर्ग के जीवन-संघर्ष, भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम मूल्य तथा लोकजीवन की सजीव झाँकी मिलती है। उनकी मुख्य रचनाओं में गुनाहों का देवता , सूरज का सातवाँ घोड़ा तथा ग्यारह सपनों का देश (उपन्यास) ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी व आद्यन्त (काव्य) , मुर्दों का गाँव , स्वर्ग और पृथ्वी, चाँद और टूटे हुए लोग व बंद गली का आखिरी मकान (कहानी संग्रह) अंधायुग (पद्य नाटक) , ठेले पर हिमालय , कहनी अनकहनी व पश्यन्ती (निबंध संग्रह) प्रमुख है इनके अतिरिक्त उन्होंने रेखाचित्र, आलोचना, एकांकी, नाटक, संस्मरण तथा यात्रा विवरण विधा में भी उल्लेखनीय सृजन कर पाठकों का दिल जीता।

पाठ-परिचय

प्रस्तुत निबंध ठेले पर हिमालय में लेखक ने कौसानी के पर्वतीय क्षेत्र में हिमालय की प्राकृतिक छटा , शांति, स्तब्धता और बर्फीली चोटियों के नैसर्गिक सौन्दर्य का मनोहारी वर्णन किया है। सोमेश्वर की घाटी में बसा कौसानी हमें स्विट्जरलैण्ड का आभास कराता है। ठेले पर लदी बर्फ की सिल्लियाँ देखकर कवि के स्मृति-पटल में कौसानी का वह स्वर्णिम सौन्दर्य सजीव हो उठता है जिसमें बादलों के बीच नीले आकाश की चाँदनी भरी रातें , केसरमय होती घाटी की संध्या और बर्फानी दिवस समस्त शाप, ताप, संघर्ष और अन्तर्द्वन्द्व से मुक्त करने वाले होते हैं। निबन्ध को पढ़ते हुए पाठक के चित्त में यह सौन्दर्य प्रत्यक्ष मूर्तिमान हो उठता है। इनकी मृत्यु सन् 1997 ई. में हुई।

ठेले पर हिमालय

ठेले पर हिमालय -खासा दिलचस्प शीर्षक है न । और यकीन कीजिए. इसे बिलकुल ढूँढना नहीं पड़ा। बैठे-बिठाये मिल गया अभी कल की बात है. एक पान की दूकान पर मैं अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फ वाला आया ठण्डे चिकने चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी मेरे मित्र का जन्म स्थान अल्मोड़ा है , वे क्षण-भर उस बर्फ को देखते रहे , उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए-खोए से ही बोले, 'यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है। और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया. ठेले पर हिमालय '। पर आपको इसलिए बता रहा हूँ कि अगर आप नए कवि हों तो भाई , इसे ले जायें और इस शीर्षक पर दो-तीन सौ पंक्तियाँ, बेडौल, बेतुकी लिख डालें-शीर्षक

मौजें है, और अगर नई कविता से नाराज हों , सुललित गीतकार हों तो भी गुंजाइश है, इस बर्फ को डॉटे , उतर आओ। ऊँचे शिखर पर बन्दरों की तरह क्यों चढ़े बैठे हो?ओ नये कवियो! ठेले पर लदो। पान की दूकानों पर बिको।

ये तमाम बातें उसी समय मेरे मन में आयीं और मैंने अपने गुरुजन मित्र को बतायीं भी। वे हँसे भी , पर मुझे लगा कि वह बर्फ कहीं उनके मन को खरोंच गई है और ईमान की बात यह है कि जिसने 50 मील दूर से भी बादलों के बीच नीले आकाश में हिमालय की शिखर रेखा को चांद तारों से बात करते देखा है , चाँदनी में उजली बर्फ को धुंधली हलके नीले जाल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है, उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है जो हर बार याद आने पर पिरा उठती है मैं जानता हैं , क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है।

सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़े चली जाती है , दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरूप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम-निशान नहीं, सूखे-भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाये हुए टेढ़े मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुंचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे। कौसानी जाने वाले सिर्फ हम दो थे, वहाँ उतर गए। बस अल्मोड़े चली गई सामने के एक टीन के शेड में काठ

THE HINDI PAGE हिन्दी का एक नया www.thehindipage.com

की बेंच पर बैठकर हम वक्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी और मौसम में उमस थी। दो घण्टे बाद दूसरी लॉरी आकर रुकी और जब उसमें से प्रसन्न बदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान में जान आई। शुक्ल जी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है उन्होंने हमें कौसानी आने का उत्साह दिलाया था और खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दीखी ही नहीं , पर उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

पर शुक्ल जी के साथ यह नई मूर्ति कौन है?लम्बा-दुबला शरीर, पतला-सौंवला चेहरा, एमिल जोला-सी दाढ़ी, ढीला-ढाला पतलून, कंधे पर पड़ी हुई ऊनी जर्किन , बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाइनाकुलर। और खासी अटपटी चाल थी बाबूसाहब की। यह पतला-दुबला मुझ जैसा ही सीकिया शरीर और उस पर आपका झूमते हुए आना। मेरे चेहरे पर निरंतर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्ल जी ने कहा -"हमारे शहर के मशहूर चित्रकार हैं सेन , अकादमी से इनकी कृतियों पर पुरस्कार मिला है। उसी रुपए से घूमकर छुट्टियां बिता रहे हैं। थोड़ी ही देर में हम लोगों के साथ सेन घुल मिल गया , कितना मीठा था हृदय से वह! वैसे उसके करतब आगे चलकर देखने में आए।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल-कल करती हुई कोसी , किनारे के छोटे-छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी! हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे , छोटे-छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दूकानें और कभी-कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी

नालों पर बने हुए पुल । कहीं-कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी-मेढ़ी, ऊपर-नीचे रेंगती हुई कॅकरीली पीठ वाले अजगर सी सड़क पर धीरे -धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमें भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों-ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब-सी निराशा छाती जा रही थी अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं , कोसी से 18 मील चले आए , कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोह है। गांधी जी ने यहीं अनासक्ति योग लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैण्ड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी , घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी-कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों-ज्यों कौसानी नजदीक आता गया त्यों-त्यों अधैर्य , फिर असंतोष और अन्त में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर , झलक आया शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर , यह स्पष्ट नहीं हो पाया क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है. उस पर, बिलकुल शिखर पर कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा-सा, बिलकुल उजड़ा-सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम-निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से

उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति-सा स्तब्ध खड़ा रह गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कल्यूर की रंग बिरंगी घाटी छिपा रखी है , इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे पचासों मील चौड़ी यह घाटी , हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल-लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद-सफेद पत्थरों की कतार और इधर उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियों-सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लँ , आँखों से लगा लूँ। अकस्मात् हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार , इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए धीरे धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन , क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में धुल जाते थे , वहीं पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया. उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात् फिर एक हलका-सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे-धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है जो अटल है यह छोटा- सा बादल के टुकड़े-सा और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रुपहला, न हलका नीला... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या ?बर्फ तो नहीं है। हौं जी बर्फ नहीं है तो क्या है ? अकस्मात् बिजली- सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वतसम्राट हिमालय है, इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है, उसका एक कोई छोटा-सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों

की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा , "बरफ वह देखों!" शुक्ल जी, सेन, सभी ने देखा, पर अकस्मात वह फिर लुप्त हो गया। लगा उसे बाल-शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है , कहीं गिर न पड़े।

पर उस एक क्षण के हिम दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था सारी खिन्नता , निराशा, थकावट सब छूमन्तर हो गई। हम सब आकुल हो उठे अभी ये बादल छँट जायेंगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा-निरावृत्त... असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी-अभी अपना घूँधट धीरे से खिसका देगी और. और तब ?और तब ? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था शुक्ल जी शांत थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी-कभी मुस्करा देते थे , जिसका अभिप्राय था , इतने अधीर थे , कौसानी आया भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू ? डाक बैंगले के खानसामे ने बताया कि, "आप लोग बड़े खुशकिस्मत हैं साहब। 14 टूरिस्ट आकर हफ्ते भर पड़ रहे , बर्फ नहीं दीखी। आज तो आपके आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।"

सामान रख दिया गया। पर , सभी बिना चाय पिये सामने के बरामदे में बैठे रहे और एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे-धीरे नीचे उतर रहे थे और एक-एक कर नए-नए शिखरों की हिम-रेखाएँ अनावृत हो रही थीं। और फिर सब खुल गया। बाई ओर से शुरू होकर दायीं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिमशिखरों की ऊबड़-खाबड़ , रहस्यमयी, रोमांचक श्रृंखला। हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं यह अगर बता पाता तो यह खरोंच , यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

घुँधला सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठण्डी-ठण्डी भाप लगती है , वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अंतर्द्वन्द्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात् एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी-कितनी पुरानी है यह हिमराशि! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है कुछ विदेशियों ने इसीलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है-चिरंतन हिम (एटर्नल स्नो)। सूरज ढल रहा था और सुदूर शिखरों पर दर्रे , ग्लेशियर, ढाल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी है या नहीं या अनंत काल से इन सूने बर्फ ढँके दर्रों में सिर्फ बर्फ के अंधड़ हू-हू करते हुए बहते रहे हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे-धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। वर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी पीली हो गई। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह-हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे , गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों।

थोड़ी देर में चौंद निकला और हम फिर बाहर निकले... इस बार सब शांत था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग

आरामकुर्सी खींचकर बैठ गया यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है? इसी हिमालय को देखकर किसने किसने क्या-क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर , एक पंक्ति, हाय, एक शब्द भी तो नहीं जानता। पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिम सम्राट के समक्ष। पर धीरे-धीरे लगा कि मन के अन्दर भी बादल थे जो छंट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है..... कुछ ऐसा जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सकें। लगा , यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है , और मुझे-छोटे भाई को-नीचे खड़ा हुआ , कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है , स्नेह भरी चुनौती भी दे रहा है - हिम्मत है ? ऊँचे उठोगे?

और सहसा सन्नाटा तोड़कर सेन रवींद्र की कोई पंक्ति गा उठा और जैसे तन्द्रा टूट गई। और हम सक्रिय हो उठे- अदम्य शक्ति, उल्लास, आनंद जैसे हम में छलक पड़ रहा था। सबसे अधिक खुश था सेन , बच्चों की तरह चंचल , चिड़ियों की तरह चहकता हुआ बोला , "भाई साहब, हम तो बंडरस्ट्रक हैं कि यह भगवान का क्या-क्या करतूत इस हिमालय में होता है। इस पर हमारी हँसी मुश्किल से ठण्डी हो पाई थी कि अकस्मात् वह शीर्षासन करने लगा। पूछा गया तो बोला, "हम नए पर्सपेक्टिव से हिमालय देखेगा ।" बाद में मालूम हुआ कि वह बंबई की अत्याधुनिक चित्रशैली से थोड़ा नाराज है और कहने लगा , "ओ सब जीनियस लोग शीर का बल खड़ा होकर दुनिया को देखता है। इसी से हम भी शीर का बल हिमालय देखता है।"

दूसरे दिन घाटी में उतरकर 12 मील चलकर हम बैजनाथ पहुँचे जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं , उन शिखरों पर कब पहुँचें, पर उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है कल ठेले के बर्फ को देखकर वे मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गए उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हैंसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है वे बर्फ की ऊँचाइयाँ बार-बार बुलाती हैं , और हम हैं कि चौराहों पर खड़े , ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने नहीं कहा था ...कबहुँक ही यहि रहनि रहौंगो... मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर ? और तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ संदेशा भेज दूं नहीं बंधु आऊँगा। मैं फिर लौट-लौट कर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है... मैं करूँ तो क्या करूँ?

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/